RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 2 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 16 जून 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

सीएम की निगरानी में टनकपुर का विकास

कार्यालय प्रतिनिधि

मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय कर रहा है बराबर समीक्षा

आई.एस.बी.टी. सहित अन्य निर्माण कार्यों पर जोर

शारदा कॉरिडोर को लेकर भविष्य की बहुत सम्भावना है

चम्पावत। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों को लेकर प्रशासन चौकन्ना है और तमाम मसलों को लेकर चम्पावत और टनकपुर में बनाए गये मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय बराबर समीक्षा कर रहे हैं। ऐसे में यह तो साफ हो चुका है कि सीएम पूरे प्रदेश में दौड़ रहे हैं लेकिन वह किसी भी तरह की चूक अपने विधानसभा क्षेत्र में नहीं चाहते हैं। यही कारण है कि सीएम बराबर दौरे कर व्यक्तिगत सम्पर्क भी करते रहे हैं। ऐसे में उम्मीद है कि पुराने समय का प्रमुख शहर और मण्डी टनकपुर उन्नति कर सकता है। सीएम की निगरानी में टनकपुर के विकास की उम्मीद जगी है। वर्तमान में आई. एस.बी.टी. सहित अन्य निर्माण कार्यों पर जोर देखा जा रहा है। टनकपुर में शारदा कॉरिडोर को लेकर भविष्य में बहुत सम्भावना है। सीएम पहले ही कह चुके हैं कि शारदा रिवर फ्रंट डेवलपमेंट का निर्माण होगा। इसके अलावा बनबसा कैनाल क्षेत्र में एक हजार लोगों की क्षमता का रैन बसेरा बनाने के निर्देश हैं।

बताते चलें कि अंग्रेजों के समय मि.टनल ने टनकपुर शहर को सुनियोजित तरीके से बसाया था। इससे पहले भी नेपाल सीमा से लगा क्षेत्र ब्रह्मदेव मण्डी के कारण विख्यात रहा है। सीमा व्यापार के अलावा यूपी

शेष पृष्ठ 5 पर

भारत के मीलपत्थर

कुन्ती के समय बदल रही थीं सामाजिक मान्यताएं

सूर्यकान्त बाली

हैरानी तो परीक्षित पुत्र जनमेजय को भी हुई और कोई भी कहेगा कि यह हैरानी उचित और स्वाभाविक ही थी कि गान्धारी सौ पुत्रों की माँ कैसे बन गई? और पुत्र भी कैसे? लगभग समवस्य, चाहें तो लगभग शब्द भी हट सकते हैं और कह सकते हैं कि समवयस्क। वैशम्पायन के माध्यम से महाभारतकार ने इसका तो उत्तर पाठकों तक पहुंचाया है, उसके बारे में एक बात न्यायपूर्ण तरीके से कही जा सकती है कि उसे पढ़ कर चिकित्साविज्ञानी और शरीरविज्ञानी चाहें तो शोध कर सकते हैं और हो सकता है कि शोध का निष्कर्ष जो निकले वह महाभारतकाल के विज्ञान के बारे में नई दिशा दे सके। पर कुन्ती के जरिए वेदव्यास जिस सामाजिक व्यवस्था को न्यायपूर्ण और मानवीय आधार पर स्थापित कर सकते थे, वैसा करने से वे क्यों हिचक गए? क्यों नहीं साहस दिखा पाए? क्यों रुक गए?

तो पहले कुन्ती के पुत्रों का प्रकरण पढ़ लिया जाए। कुन्ती यदुवंश के शूर नामक राजा की लड़की थी और कृष्ण के पिता वासुदेव की सगी बहन थी। इस नाते वह कृष्ण की बुआ थी। पर कुन्तीभोज द्वारा गोद लिये जाने के कारण कुन्ती का यह सम्बन्ध महाभारत में उस तरह से रेखांकित नहीं हुआ। विवाह से पूर्व कुन्ती को सूर्य की कृपा से एक पुत्र प्राप्त हुआ था जिसे इतिहास में हम सभी कर्ण के नाम से जानते हैं। कुन्ती का विवाह हस्तिनापुर नरेश पाण्डु के हुआ था जो पीले शरीर का होने के बावजूद अपने समय का प्रतापी राजा माना गया। वह स्वयं अपने प्रयासों से पुत्र प्राप्त करने में असमर्थ था जिसे महाभारतकार ने एक ऋषि के शाप का परिणाम बताया है। अब जैसा हमारा सामाजिक ढाँचा है, और जैसा समाज महाभारत के समय हमारा था, उसमें पुत्र प्राप्ति की अत्यन्त बलवती आकांक्षा का होना स्वाभाविकता की कोटि में ही आप रख सकते हैं। इसी आकांक्षा से प्रेरित पर स्वयं अपने प्रयासों से पुत्र प्राप्त करने में असमर्थ महाराज पाण्डु ने अपनी प्रथम पत्नी कुन्ती से जो कहा वह महत्वपूर्ण है, इसलिए कि उसमें सैक्स यानी काम को मनुष्य के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की सहज स्थिति मान कर पुत्र प्राप्ति के सम्बन्ध में जो व्यवस्थाएं दी गई हैं वे अद्भुत हैं। यह सारा प्रकरण महाभारत के आदिपर्व के तीन अध्यायों (119-121) में है।

पुत्र का मूलभूत अधिकार बताते हुए पाण्डु कुन्ती से जो कहते हैं उसका अर्थ यह है कि पुत्र को दायाद अर्थात उत्तराधिकार पाने का हक हासिल है। उत्तराधिकार पाने लायक पुत्र दो तरह के माने गए हैं- बन्धुदायाद और अबन्धुदायाद और पाण्डु कुन्ती को समझाते हैं कि ऐसे दोनों वर्गों वाले पुत्र छह-छह प्रकार के होते हैं। फिर छह तरह के बन्धु दायाद पुत्रों के बारे में पाण्डु ने कहा: 1. स्वयंजात अर्थात वह पुत्र जो स्वयं अपने प्रयास से उत्पन्न किया गया है। 2. प्रणीत यानी जो अपनी पत्नी के गर्भ से किसी दूसरे पुरुष के प्रयास से प्राप्त किया गया है। 3. पुत्रिका सुत, अपनी पुत्री के पुत्र यानी दौहित्र को पुत्र मान सकते हैं। 4. पौनर्भव, जो दूसरी बार ब्याही गई स्त्री से उत्पन्न हुआ हो। 5. कानीन, यानी जो विवाह से पहले ही कन्या को प्राप्त हो जाए। 6. भगनिपुत्र, यानी अपनी बहन का बेटा। चूंकि इनमें से हर तरह के पुत्र की प्राप्ति किसी न किसी रूप में अपने परिवारजनों से जुड़ी है, इसलिए इन पुत्रों को बन्धुदायात कहा गया है। फुटनोट के तौर पर यह अंकित करने में कोई हर्ज नहीं कि इस बन्धुदायदों की पत्नी से प्राप्त पुत्रों के आलावा पुत्री और भगिनी के पुत्र तो शामिल हैं, पर भाई के पुत्रों की कोई गिनती नहीं की गई। संस्कृत में भाई के पुत्र को भ्रातृत्व करते हैं। पर भ्रातृत्व के दो अर्थ हैं- भतीजा और शत्रु। तो क्या दोनों अर्थ पर्यायवाची हैं? न हो तो भी हमारे देश की महाभारत कालीन सामाजिक संरचना में स्त्रीपक्ष को ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है। यह इसका उदाहरण तो है ही।

अब जरा छह तरह के अबन्धु दायादों से भी परिचय हो जाए। 1. दत्त, जो माँ-बाप द्वारा स्वयं किसी को दे दिया गया हो। 2. क्रीत, यानी धन आदि दे कर खरीदा गया पुत्र। 3. कृत्रिम, जो खुद ही पुत्र बन कर किसी के साथ रहना शुरू कर दे। 4. सहोढ, उस कन्या से प्राप्त पुत्र जो गर्भावस्था में ही ब्याही गई हो। 5. ज्ञातिरेता, अपने कुल की कोई सन्तान। 6. हीनयोनिधृत, यानी अपने से हीन जाति की स्त्री से प्राप्त पुत्र। इतने तरह के पुत्रों का विवरण दे देने के बाद पाण्डु ने कुन्ती से कहा कि चूंकि वह स्वयं सन्तान प्राप्ति में असमर्थ है, इसलिए वह आज उसे अनुमति दे रहा है कि वह उस (पाण्डु) जैसे या उस (पाण्डु) से भी श्रेष्ठ पुरुष से सन्तान प्राप्त करे। (आदिपर्व)।

यह सब पढ़ने के बाद महाभारत कालीन अपने पूर्वजों को प्रणाम करने को मन करता है कि अपने परिवार और समाज की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने देने के लिए उन्होंने कैसे-कैसे तर्कसम्मत नियम बना रखे थे और काम

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

नौकरी और सपने

सपने हर किसी के होते हैं। यह बात अलग है कि कौन कैसे सपने देख रहा है और किसके क्या सपने साकार हो रहे हैं। इसी में यदि नौकरी को भी जोड़ दिया जाए तो इस प्रकार के सपने बहुत अलग होते हैं। जैसा की वर्तमान की दौड़ में युवा देखते हैं कि वह सबकुछ आसानी से प्राप्त कर लें और सलाम ठोकने वाले उनके आस-पास खड़े रहें। विभिन्न क्षेत्रों के छोटे-बड़े पदों के लिये प्रतिस्पर्द्धा बढ़ती जा रही है। ऊपर से सेवा के प्रतिष्ठित पदों के हर कोई बैठना चाहता है। ऐसे पदों पर जाने वालों की विद्वता और उनका लक्ष्य वाकेई बहुत ठोस होता है। किसी भी परिस्थिति से निकले ऐसे युवा चाहते हैं कि उच्च पद पर आसीन होकर वह समाज को दिशा दें लेकिन क्या वाकेई ऐसा हो रहा है। बिल्कुल ऐसा ही हो रहा है और बिना किसी दबाव समाज के लिये प्रेरणादायक अधिकारियों की गिनती है। हालांकि हालातों और राजनीतिक दबाव में कुछ फिसल जाया करते होंगे लेकिन इनकी सोच समाज के लिये ही होनी चाहिये तभी सबका सम्मान है अन्यथा तो कोरे सपने और चाकरी करने वालों की भीड़ दुनियाभर में है।

'नौकीर और सपने' को लेकर इतनी भूमिका लिखने के पीछे का कारण अभी की ताजा घटना है जिसमें आईपीएस रचिता जुयाल ने मुख्यसचिव को स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के तहत इस्तीफा दे दिया। उत्तराखण्ड की इस चर्चित अधिकारी ने आंखिर यह निर्णय क्यों लिया होगा इसको लेकर भी चर्चाएं होने लगी हैं। उनकी बातों का सच महसूस किया जा सकता है।

भारतीय पुलिस सेवा से इस्तीफा देने के बाद उत्तराखण्ड कैडर की आईपीएस अधिकारी रचिता जुयाल ने कहा कि मेरे भी कुछ सपने हैं, जिन्हें मैं पूरा करना चाहती हूँ। मैंने व्यक्तिगत कारणों से दस साल की सेवा के बाद इस्तीफा दिया है। यह निर्णय परिवार के साथ काफी समय से चर्चा के बाद लिया। जुयाल ने कहा कि उत्तराखण्ड के प्रति उनका प्रेम अभी भी उतना ही है और मैं हर सम्भव तरीके से राज्य में योगदान देती रहूँगी।

रचिता जुयाल के इस्तीफे के बाद यह तो समझ आने लगा है कि पहले से अधिकारी जिस उत्साह से अपने कार्यों को अंजाम देता था और व्यवस्था बनाने में उसकी भूमिका होती थी, अब ज्यादातर दबाव में हैं और अवसरवादी निचोड़ने को तैयार बैठे हैं। ऐसे में अपने सपने को कैसे साकार हों, यह करें।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

आतंकवाद साझा समस्या

न्यूयॉर्क। कांग्रेस सांसद शशि थरूर के नेतृत्व में भारतीय सांसदों के सर्वदलीय प्रतिनिधिमण्डल ने न्यूयॉर्क में 9/11 स्मारक में जाकर आतंकवादी हमले में मारे गये लोगों को श्रद्धांजलि दी। थरूर ने पहलगाव आतंकी हमले का उल्लेख करते हुए कहा कि आतंकवाद साझा समस्या है, मिलकर मुकाबला करें।

पोलैंड राष्ट्रपति चुनाव में करोल की जीत

वारसां। पोलैंड के राष्ट्रपति चुनाव में रूढ़िवादी नेता करोल नवरोकी ने जीत हासिल की। नकराकी ने बेहद करीबी मुकाबले में 5089 फीसदी मत हासिल किये जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी वारसां के मेयर रफाल त्राक्कोवस्की को 49.11 प्रतिशत वोट मिले।

सिंगापुर में जालसाजी के आरोप

सिंगापुर। सिंगापुर में भारतीय मूल के दो नागरिकों समेत नौ लोगों पर जालसाजी का कथित तौर पर अपने बैंक खातों का इस्तेमाल करने की अनुमति देने का आरोप लगा है।

अवैध कब्जे के खिलाफ प्रदर्शन

कराची। पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में हिन्दू समुदाय के सदस्यों ने हैदराबाद शहर में एक ऐतिहासिक मन्दिर की छह एकड़ जमीन पर अवैध कब्जे के खिलाफ प्रदशैन किया। यह विरोध कराची से 185 किमी दूर मूस खातियान जिले के टांडो जाम कस्बे में हुआ।

जासूसी करते दो आरोपी पकड़े

चण्डीगढ़। पंचाब के तलनतारन जिले के एक व्यक्ति को ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान सेना की तैनाती और रणनीतिक स्थलों के बारे में सम्वेदनशील जानकारी पाकिस्तान खूफिया एजेंटों के साथ साझा करने के आरोप में पकड़ा है।

टिप्पणी पर बिलावल भुट्टो की बेइज्जती

न्यूयॉर्क। पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी के उस बयान का लेकर एक पत्रकार ने यहां उनको आड़े हाथ लिया जिसमें उन्होंने भारत में मुस्लिमों की कथित तौर पर खराब और खतरनाक छवि पेश किए जाने को लेकर टिप्पणी की थी।

फसक

दाज्यू, सुगम-दुर्गम को लेकर बहार हो रही ठैरी

पत्तल चाटने और चटवाने का भी अपना मजा होता है बल

दाज्यू, हरिद्वार जमीन घोटाले में सरकार ने डीएम धर्मेन्द्र सिंह, तत्कालीन नगर आयुक्त वरुण चौधरी, तकनीकी एसडीएम अजयवीर सिंह समेत सात अधिकारियों को निलम्बित कर दिया, तभी से हमारे मन में सुगम-दुर्गम को लेकर सवाल उठ रहे हैं। जमीन घोटाला क्या था, किसने किया, कितना किया, इसको लेकर विजिलेंस जाँच होगी लेकिन हमें तो रिमझिम मैडम की चिन्ता हो रही है। सुना है उनके कागजों की जाँच के लिये पुलिस से पत्र आया है। सरकार उनके भी कागज पत्तर चैक करवा रही है। प्राइमरी मास्टर से शुरुआत क्या हुई बीएड सहित कई कागज औने-पौने में बटोर लेने वाले ठैरे। जमाने की भीड़ इन्हें विद्वान मान बैठी है, उन्हें क्या पता कि किन-किन अड्डों पर छोटे-भटूरे खाकर सरकारी मास्साब बने हैं। मास्साब क्या, पूरे बेताल हो चुके हैं।

दाज्यू, उच्चशिक्षा मंत्री धन दा एक पेड़ माँ के नाम अभियान की बात कर रहे हैं और पटरी पार वाले कालेज में घिस्सी घिसाई हो रही है बल। सोबन सिंह बता रहा है- 'मटर-पनीर चाटने पर विशेष अवकाश प्रदान कर दिया जाता है। टांग उठाकर जिधर धर दो उधर उत्तर दिशा मान ली जाती है।' दाज्यू, सोबन की बात सुनकर हमें भी बहुत मन करने लगा कि पटरी पार वाले डिग्री कालेज के दर्शन हो जाएं लेकिन बिल्लू माई ने रोते हुए बताया- 'बहुत खतरनाक है। पटरी पार करते ही बलात्कार, भ्रष्टाचार, गोली मारने, आत्महत्या, लूटने, दफन कर देने जैसे शब्द सुनाई देते हैं। सचिव, सीएम, कैप्टन, कर्नल, वकील, जहाज आयोग, वित्त मंत्रालय और भी पता नहीं कैसा कैसा सुनाई देता है।'

इस बीच सूचना मिली की विश्वविद्यालय के पिथौरागढ़ कैम्पस में परीक्षा देने आई चार छात्राओं के पर्स चोरी हो गये हैं। पीड़ितों ने कैम्पस निदेशक को ज्ञापन दिया। इसके अलावा वह कर भी क्या सकते हैं? दाज्यू, ये तो पर्स चोरी की घटना है। पटरी पार तो कितना कुछ हो चुका है। हमने चाहरदीवारी से झांका तो पता चला कि कालेज आने-जाने का कोई समय नहीं है। परीक्षा ड्यूटी सीता स्वयंवर जैसी हो रही है बल। कोई दिन में 11.30 बजे बाद आ रहा है तो कोई दिन में 1 बजे घर को जा रहा है। छात्र नेता पपलू सिंह बता रहा है- 'लाल मिर्च खाकर गुलाब जामुन की मांग करने वाला प्रोफेसर सुबह उठते ही बीड़ी का बण्डल जला रहा था। धूम्रपान के अलावा उनके शौक बहुत तरावट वाले हैं।' दाज्यू, अब समझ आ रहा है कि सुगम-दुर्गम को लेकर क्यों मारामारी होती होगी। मोटी पगार पाने वाले ही जानते हैं कि सुगम-दुगर्म की बहार हो रही ठैरी। पत्तल चाटने और चटवाने का अपना मजा होता है बल। भिक्कू पहाड़ से आते समय काफल-पुलम-खुमानी के दस-पाँच दाने साहब लोगों को सुंघा देने वाला ठैरा। खुशबू की महक बहुत दिनों तक रहती है। इसके बाद वह मगज मारता है बल। हरिद्वार में भाजपा की पूर्व महिला नेता ने अपनी ही बेटी का गैंगरेप करवा डाला तो हमें प्रोफेसर बुलरुवा की याद आ गई। अपने ही बेटे का प्रेक्टिकल लेकर अपने ही हाथ नम्बर चढ़वा दिये और लोटा लेकर उसे हगने के लिये प्लाट में छोड़ दिया। दाज्यू, प्रोफेसर अब दावा कर रहा है कि जितनी दूर तक हगा-मूता है सब उसका है। क्या यही सुगम-दुर्गम में होता होगा? हमारी कुछ समझ नहीं आ रहा है।

दाज्यू, भववान भोलेनाथ से प्रार्थना कर रहे हैं कि अपने रोग से परेशान लोगों पर दया करना। कर्मों का फल तो अपने आप से मिल जाने वाला ठैरा।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

आपके पत्र

हमारे देश की पाश्चात्य गुलामी कब छूटेगी

हमारा देश भारत अंग्रेजी शासन की गुलामी से छूट कर दिनांक 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ तब से प्रति वर्ष 15 अगस्त को देशवासी बड़े उत्साह से स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। अपनी इमारतों में तिरंगा झण्डा फहराते हैं, खुशी के गीत गाते हैं। तब से हमारी लोकतान्त्रिक सरकार बनी और विधिवत 5-5 वर्षों में विधानसभा लोकसभा के लोकतान्त्रिक तरीके से चुनाव होते हैं सरकार बनती है। अपना संविधान है। इस तरह देश को आजाद हुए 78 साल होने को हैं लेकिन सही मायने में कहिये तो देश ठीक से आजाद नहीं हुआ है। देश के दो टुकड़े बने भारत और पाकिस्तान। जब से पाकिस्तान बना है तब से पाकिस्तान की ओर से उपद्रव व उत्पात होते रहते हैं, वह देश लुक छिप कर आतंक फैलाता रहता है जिससे कितने ही भारतीय नागरिक व सैनिक शहीद हो चुके हैं। पाकिस्तान ने भारत देश के साथ कभी भी मित्रता का भाव नहीं रखा, सदैव शत्रुभाव का व्यवहार किया। जिससे शान्ति व्यवस्था हमेशा भंग होती रहती है। यह आजाद कहाँ से हुआ। दूसरी तरफ आजाद हुआ था तो हमारे देश की स्वदेशी राजभाषा हिन्दी होनी चाहिये थी लेकिन अभी तक अंग्रेजी ही सरकारी राजकाज की भाषा चल रही है और विद्यालयों में भी शिक्षा की भाषा इंग्लिश मीडियम से चलती है। सरकारी विद्यालयों में पहले हिन्दी मीडियम ही पढ़ाई की भाषा थी जो अब विलुप्त हो रही है। क्योंकि अब शिक्षा का निजीकरण करके पब्लिक स्कूल खोले जा रहे हैं और उनमें शिक्षा की भाषा इंग्लिश मीडियम है। देश की जनता स्वयं विचार करे कि क्या देश वास्तव में स्वतंत्र हो गया है, जबकि शिक्षा व राजकार्य की भाषा स्वदेशी हिन्दी न होकर पाश्चात्य विदेशी भाषा को अंगीकार किया गया है। जब देश का अपना संविधान है, अपनी संवैधानिक सरकार है, अपना तिरंगा झण्डा है, तब अपनी स्वदेश मातृभाषा हिन्दी के बजाय विदेशी भाषा अंग्रेजी क्यों रखी गई है। देश में तथा राज्य सरकारों में अपना शासन चलाने वाले कर्णधारियों से अपेक्षा की जाती है कि देश को 78 साल बीतने पर पर भी अपनी स्वदेश की राजभाषा हिन्दी न होकर पाश्चात्य विदेशी भाषा अंग्रेजी का धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है। जो कि बड़े शर्म की बात है। हमारे देश भारत को फ्रांस देश से सबक लेना चाहिय कि जहाँ की मातृभाषा फ्रेन्च है वहाँ फ्रेन्च को ही महत्व दिया जाता है। देश में नेता एवं जनता स्वयं विचार करें कि पाश्चात्य भाषा का प्रयोग करना गुलामी स्वीकार करने के समान है। अपेक्षित तो यह होगा कि सभी विद्यालयों में एवं राजकार्य में विदेशी भाषा अंग्रेजी के स्थान पर अपने देश की स्वदेशी, सनातन एवं पौराणिक भाषा संस्कृत को पढ़ाने का माध्यम बनाया जाए।

'निज भाषा उन्नति अहै, यही उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।'

-भारतेन्दु हरीशचन्द्र

जिस देश भूमि में जन्म यिा, बलिदान उसी पर हो जाएं।
वह शक्ति हमें दो हे दयानिधि, कर्तव्य मार्ग पर डट जाएं।

-नन्दा बल्लभ पाण्डे
ज्योलीकोट, नैनीताल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जिम्मेदार अधिकारी

आईपीएस तृप्ति भट्ट का बदरीनाथ थाने को गोद लेना प्रशासनिक जिम्मेदारी का उदारण है

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखंड में पुलिस व्यवस्था को जमीनी स्तर पर सुदृढ़ करने और 'आदर्श थाने' की अवधारणा को साकार करने के लिए एक महत्वपूर्ण और अभिनव पहल की शुरुआत की गई है। इस पहल के अन्तर्गत, भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी अब अपनी प्रथम नियुक्ति स्थल के एक पुलिस थाने (कोतवाली/थाना) को गोद लेकर उसे विकसित करने का कार्य करेंगे। इस कदम का दोहरा उद्देश्य है: पहला, वरिष्ठ अधिकारियों को उनके शुरुआती अनुभवों से जोड़ना और उस समय से लेकर अब तक आए बदलावों का गहन अध्ययन करना और दूसरा, इन अनुभवों का लाभ उठाते हुए ग्रास रूट स्तर पर पुलिस कार्यप्रणाली की कमियों को दूर कर, बुनियादी ढांचे में सुधार कर और पुलिसकर्मियों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित कर नए आयाम स्थापित करना। इस महत्वपूर्ण क्रम में, वर्तमान में सेनानायक 40वीं वाहिनी पीएसी हरिद्वार एवं जीआरपी/एटीएस के पद पर तैनात IPS r`fIr Hkh] IPS ने आगे बढ़कर कोतवाली श्री बद्रीनाथ को गोद लिया है। तृप्ति भट्ट के लिए बद्रीनाथ क्षेत्र का विशेष महत्व है, क्योंकि उनकी प्रथम नियुक्ति वर्ष 2017 से 2019 के बीच इसी जनपद चमोली में हुई थी, जिसके अन्तर्गत बद्रीनाथ धाम आता है। अपनी पहली तैनाती के दौरान तृप्ति भट्ट ने पुलिस कल्याण और कार्यप्रणाली में सुधार के लिए कम्र उल्लेखनीय कार्य किए थे। इनमें राज्य का पहला वर्चुअल पुलिस स्टेशन शुरू करना उनकी एक प्रमुख और अभिनव पहल रही थी, जिसने पुलिसिंग के क्षेत्र में डिजिटल नवाचार का मार्ग प्रशस्त किया। बद्रीनाथ पहुँचने पर तृप्ति भट्ट ने विधिवत रूप से कोतवाली श्री बद्रीनाथ को गोद लेने की प्रक्रिया पूरी की।

उन्होंने थाने का गहन निरीक्षण किया, जिसमें एक चेकलिस्ट के माध्यम से वर्तमान व्यवस्थाओं, मौजूद कमियों, क्षेत्र के क्राइम ग्राफ, सुरक्षा प्रबन्धन और पुलिस कर्मियों के लिए उपलब्ध सुविधाओं जैसे बैरक, कार्यालय, भोजनालय और शौचालयों की स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने थाने की तैयारियों का बारीकी से आकलन किया, जिस पर उन्होंने संतोष व्यक्त किया तथा आवश्यक निर्देश भी दिए। अपने इस दौरे के दौरान, उन्होंने मन्दिर सुरक्षा में वहाँ तैनात एंटी-टेररिस्ट स्क्वाड के जवानों को भी ब्रीफ किया और उन्हें आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए। उन्होंने एटीएस द्वारा तैयार किए गए टास्क की मॉनिटरिंग की। भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में लगातार चैकिंग, अभिसूचना संग्रह, सत्यापन पर विशेष ध्यान देते हुए संयुक्त अभियान चलाने के निर्देश दिए। महिलाओं की सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखने तथा दर्शन के दौरान बुजुर्ग, बीमार और दिव्यांगों को प्राथमिकता देने का आहृवान किया। साथ ही सभी पुलिस कर्मियों को जनता के प्रति मित्रवत व्यवहार रखने और सेवा भाव से कार्य करने पर बल दिया।

तृप्ति भट्ट भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) की उन काबिल अफसरों में से एक हैं, जिन्होंने कन्धे पर सितारे और माथे पर अशोक स्तम्भ सजाने के लिए 16 लगी लगाई सरकारी नौकरी तक छोड़ दी। तृप्ति भट्ट भाई-बहनों में सबसे बड़ी हैं। इन्होंने अपनी शुरुआती शिक्षा उच्च माध्यमिक विद्यालय अल्मोड़ा उत्तराखण्ड से पाई। 12वीं की पढ़ाई केन्द्रीय विद्यालय से की। पन्तनगर विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग में स्नातक करने के बाद नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन (एनटीपीसी) में सहायक प्रबन्धक के रूप में काम किया। तृप्ति भट्ट की सक्सेस स्टोरी उन लोगों के लिए मिसाल है, जो सरकारी नौकरियों के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा के दौर में एक बार सरकारी नौकरी लगने के बाद उसी में जिन्दगी खपा देते हैं और अपने बड़े ख्वाब को अधूरा ही छोड़ देते हैं।

आईपीएस तृप्ति द्वारा बदरीनाथ कोतवाली को गोद लेना न केवल एक प्रशासनिक पहल है, बल्कि यह पुलिस व्यवस्था में जनहित, तकनीकी नवाचार और सम्वेदनशीलता को समाहित करने की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम भी है। यह पहल भविष्य में अन्य थानों के लिए एक मॉडल बन सकती है, जो उत्तराखण्ड पुलिस के प्रशासनिक दृष्टिकोण सेवा भावना को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएगी।

ज्योतिष की बातें- 233

22 जून 2025 को बुध स्वराशि मिथुन से निकलकर शत्रुराशि कर्क में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कोई शुभाशुभ दृष्टि अथवा युति भी नहीं होगी अत: बुध निर्बल रहेगा। बुध बुद्धि, वाणिज्य, व्यापार, मामा, लेखन कला, गणित, लेखा, रक्त, त्वचा, त्रिदोष प्रकृति आदि का कारक होता है। फलदीपिका के अनुसार बुध के लिए दूसरा, चौथा, छठवाँ, आठवाँ, दसवाँ और ग्यारहवाँ स्थान शुभ होता है। अत: अगले 70 दिन बुध अपने कारक विषयों में मिथुन, मेष, कुम्भ, धनु, तुला व कन्या राशि के जातकों को अल्पमात्र में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य जातकों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

21 जून 2025 शनिवार को सूर्य सायनमान से कर्क राशि में प्रवेश करेगा अत: वर्षा ऋतु का प्रारम्भ हो जाएगा। जो लोग वर्षभर त्रिफला चूर्ण का सेवन करते हैं उन्हें इस वर्षा ऋतु में त्रिफला चूर्ण में थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर सेवन करना चाहिए। यहाँ पर ग्रह विशेष का स्वतन्त्र रूप से गोचरफल प्रस्तुत किया जाता है। व्यक्तिविशेष के सूक्ष्म विश्लेषण के लिए उसकी जन्मकुण्डली, महादशा आदि का विचार करना आवश्यक होता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 123

किसकी जय, किसकी पराजय

भारत-पाकिस्तान के बीच अब तक पाँच युद्ध हो चुके हैं। जिस समय भारत अपना विजयोत्सव मनाता है उस समय पाकिस्तान में भी विजयोत्सव मनाया जाता है। वास्तविकता क्या है? इसका विचार करें।

काश्मीर युद्ध (1948)- इस युद्ध के परिणाम स्वरूप एक तिहाई कश्मीर पाकिस्तान के कब्जे में चला गया और नई नियन्त्रण रेखा का निर्माण हुआ। विचार करें, कि जय किसकी हुई!

भारत-पाक युद्ध(1965)- यह युद्ध कश्मीर को लेकर लड़ा गया था। सोवियत संघ और अमेरिका के हस्तक्षेप के बाद ताशकंद में समझौता हुआ। फलस्वरुप युद्ध विराम की घोषणा की गई। पाकिस्तान द्वारा हथियाया गया एक तिहाई कश्मीर, हमारा पलड़ा भारी होने की बावजूद भी, हम वापस न ले सके। विचार करें, विजय किसकी हुई?

तीसरा युद्ध(1971)- इस युद्ध के परिणाम स्वरूप बांग्लादेश का निर्माण हुआ। शिमला समझौते के तहत बाद में अधिग्रहीत क्षेत्र पाकिस्तान को वापस कर दिए गए। युद्ध में लगभग 93,000 पाकिस्तानी बन्दी सैनिकों को भारत ने छोड़ दिया लेकिन अपने 54 सैनिकों को वापस लिया ही नहीं। सोचिए, विजय किसकी हुई? कारगिल युद्ध(1999)- पाकिस्तानी सेनाएं भारतीय क्षेत्र में घुस आईं। भारत ने दो महीने के भीतर उन स्थानों पर नियन्त्रण वापस पा लिया। क्या इसको विजय कहा जाएगा? चोरी का माल बरामद होना ही पर्याप्त होता है क्या? या फिर चोर को पकड़कर उसे सजा देना भी आवश्यक होता है?

नवीनतम युद्ध(मई 2025)- पहलगाम में हुई आतंकवादी घटना के फलस्वरूप दोनों देशों के मध्य युद्ध हुआ। भारत का पलड़ा भारी था लेकिन बिना किन्हीं स्पष्ट शर्तों के 10 मई को युद्ध विराम कर दिया गया। इस कारण न तो हम पाक अधिकृत कश्मीर ले सके, न ही उन चार आतंकवादियों को पकड़ कर सजा दे सके। विचार करें, किसकी विजय हुई?

इन सभी युद्धों में भारतीय सेना ने अपना पराक्रम दिखाया लेकिन समझौते की मेज पर बैठकर सैनिकों के महान बलिदान को सदैव व्यर्थ कर दिया गया ।

- ओंकार नाथ कोष्टा

प्रेरणादायक अभियान

प्रो.शिवदत्त तिवारी की मुहीम 'प्राण वायु'

पि.हि.प्रतिनिधि

हल्द्वानी। पर्यावरण संरक्षण के सेवानिवृत्त प्रोफेसर शिवदत्त तिवारी की मुहीम 'प्राण वायु' रंग ला रह है। तमाम शिक्षण संस्थाओं, प्रतिष्ठानों, सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों और घरों के बाहर गमले में सदाबहार पौधे लगाकर इनका नाम 'प्राण वायु' रखने का रिवाज चल रहा है। प्रो. तिवारी के आस-पास तो लगभग सभी ने इस मुहीम को गति देते हुए गमले लगा लिये हैं।

बताते चलें कि महिला डिग्री कालेज हल्द्वानी के वनस्पति विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त प्रो.एस.डी.तिवारी ने पौधरोपण अभियान को बढ़ाते हुए 'प्राण वायु' नाम से जो मुहीम चलाई वह हल्द्वानी शहर के बाद अन्य शहरों तक भी फैलती गई। प्रो.तिवारी ने अपने ऊंचापुल आवास में इसके लिये बकायता विशेष अभियान चलाया और निरन्तर घूम-घूम कर भी लोगों को पौधरोपण के लिये प्रेरित किया। बताया कि यदि स्थान नहीं है तो अपने आवास में ही गमलों में पौध लगाने की आदत बनाएं। पर्यावरण के प्रति सचेत करते हुए उन्होंने विश्व पर्यावरण दिवस में भी जगह-जगह इस सन्देश को प्रसारित किया कि शुद्ध वायु के लिये पेड़-पौधों से दोस्ती बनाए रखें। आक्सीजन की मात्रा हमारे आस-पास बनी रहे इसके लिये जितना सम्भव हो सके प्रयास करना है। शहरों में जिनके पास स्थान की कमी है तो वह बड़े फलदार वृक्ष के स्थान पर गमलों में ही पौध लगा सकते हैं।

इस बीच नैनीताल जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी विभागों को निर्देश जारी किए हैं कि हर मतदेय स्थल पर दस पौधे रोपें। जनपद के सभी विधान सभा क्षेत्र में कुल 635 मतदान केन्द्र और 1005 मतदेय स्थल हैं। इन सभी जगहों पर सहजन, पईया, दालचीनी, कचनार, सेमल, नीम जैसे पौधे लगाये जायेंगे। इन दिनों में वृक्षारोपण का अभियान जारी है जो हरेला पर्व तक चलता रहेगा। वन विभाग भी इस कार्य के लिये सहयोग कर रहा है।

तल्ला दुम्मर में जन जागरण अभियान और वृक्षारोपण का उत्सव

मुनस्यारी। तल्ला दुम्मर में जन जागरण अभियान और वृक्षारोपण उत्सव जारी है। पुर्ब्याल देवता का आशीर्वाद लेकर जिस प्रकार की मुहीम क्षेत्रवासियों ने की है वह पर्यावरण के साथ आपसी एकता भाईचारे का प्रतीक है।

ग्राम पंचायत तल्ला दुम्मर के नव नियुक्त युवा संरपच गिरधर बृजवाल की अध्यक्षता में महिला मंगल, युवा पुरुष वर्ग, प्रकृति प्रेमी चन्द्र सिंह बृजवाल, संगीत प्रेमी व गाँव के रामलीला मंचन की बुनियाद रखने वाले भूपाल सिंह बृजवाल (रेलवे), अपने मुलुक के हितैषी भूपेन्द्र सिंह बृजवाल इंस्पेक्टर (पुलिस विभाग), खेल अध्यापक दिनेश सिंह बृजवाल (सेन्ट्रल विद्यालय) अन्य सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा भव्यता के साथ गाँव में हरियाली का पर्व जन जागरण अभियान में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अभियान के तहत परिक्षेत्र में बांज के बीज साथ-साथ पेड-पौधे भी रोपित किया गया। ग्रामवासीयों ने आयोजन में अति उत्साहित होकर कार्य को भली-भाँति अंजाम दिया। जिस प्रकार का उत्साह व आवत गाँव में हुई उससे यह आयोजन भविष्य के पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत है। पुरखों द्वारा पुर्ब्याल जी के मन्दिर में वन क्षेत्र पुन: उसी तरह बनाए रखने के लिए भी कटिबद्ध है जिस तरह अतीत में अपने पुरखों द्वारा संजोए रक्खा था। कार्यक्रम में कहा गया कि पुर्ब्याल जी की वन बाटिका, ईष्ट देव की सेवा में सभी हमारे गाँव से बाहर रहने वाले प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों से भी अनुरोध है कि 'अपना गाँव अपनी पहचान' के संरक्षण में अवश्य भरपूर सहयोग दें।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बागेश्वर : नौ माह में हटेंगे अतिक्रमण

नैनीताल। उत्तराखण्ड हाईकोर्ट ने बागेश्वर जिले में सरकारी जमीन व पुराने बंगलों पर अतिक्रमण सम्बन्धी याचिका पर सुनवाई करते हुए डीएम को निर्देश दिये हैं कि 9 माह में अतिक्रमण हटाकर रिपोर्ट पेश करें। इसके लिये राजस्व, लोनिवि, वन सहित सम्बन्धित विभागों की कमेट बनेगी।

पीजी कर नदारद, नोटिस जारी

हल्द्वानी। पीजी की पढ़ाई पूरी करने के बाद 7 सरकारी डॉक्टर अपने तैनाती स्थलों से नदारद हैं। ये डाक्टर उच्चशिक्षा के लिए सरकारी खर्चे पर भेजे गए थे। ऐसे में विभाग द्वारा नोटिस जारी कर दिया गया कि निर्धारित समय पर ज्वाइन नहीं करने पर कार्रवाई होगी और ब्याज के साथ वसूली भी।

साह-चौधरी समाज ने सौंपा ज्ञापन

अल्मोड़ा। साह-चौधरी समाज से जुड़े लोगों ने नगर निगम महापौर अजय वर्मा को नगर की विभिन्न समस्याओं को लेकर ज्ञापन सौंपा। मांग की कि नगर में नवनिर्मित पार्किंग स्थलों में से एक का नाम राज्य की पहली महिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. बिशना देवी साह के नाम पर किया जाए।

मूनाकोट में कालेज की मांग को लेकर मिले

पिथौरागढ़। मूनाकोट विकास खण्ड में डिग्री कालेज खोले जाने की मांग को लेकर विधयक विशन सिंह चुफाल ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से भेंट की। बताया कि इसका प्रस्ताव प्रशासन की ओर से शासन को भेजा गया है।

डीडीहाट में बनेंगे मिनी स्टेडियम

डीडीहाट। राज्य खेल परिषद के उपाध्यक्ष दर्जा राज्य मंत्री हेमराज सिंह बिष्ट ने बताया कि डीडीहाअ व नारायण नगर में मिनी स्टेडियम बनेंगे। साथ ही राष्ट्रीय स्तर की बालीबाल प्रतियोगिता होगी। दर्जा मंत्री के डीडीहाट पधारने पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। इनमें पूर्व नगर पालिकायक्ष कमला चुफाल, राजेन्द्र भाटिया, संदीप बोरा, दीपक मनोला आदि थे।

गणाईगंगोली में जाम समस्या बनी

सेराघाट। गणाई गंगोली मुख्य बाजार में जाम की समस्या जस की तस बन हुई है, इस कारण वाहन सवार यात्रियों सहित स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मुख्य मार्ग पर दिन भर सैकड़ों वाहन पर्वतीय रूट के आते जाते हैं और यहीं पर टैक्सी व कई लोगों के वाहन सड़क के दोनों ओर खड़े रहने से इस प्रकार की दिक्कतें हो रही हैं। जाम से निजात पाने को क्षेत्रवासियों को ही पहल करनी होगी।

आदि कैलास यात्रियों की भीड़ जुटी, शिव धाम के लिये ओम पर्वत का रुख

धारचूला। ग्रीष्मकालीन अवकाश में आदि कैलास यात्रियों की भीड़ जुट चुकी है। शिव धाम के लिये ओम पर्वत की ओर रुख करने वालों से इलाका गुलजार है। अभी तक पन्द्रह हजार यात्री यहाँ यात्रा कर चुके हैं।

30 मई से शुरू हुई आदि कैलाश यात्रा को लेकर यात्रियों में जबर्दस्त उत्साह है। इससे स्थानीय कारोबारियों में भी जोश है। टैक्सी संचालक और होम स्टे संचालित करने वाले यात्रियों की आवाजाही के बाद अपने कारोबार में जुटे हुए हैं। उपजिलाधिकारी मंजीत सिंह ने बताया कि अभी 350 परमिट जारी किए गए हैं। 12800 से अधिक परमिट जारी हो चुके हैं। नेटवर्किंग इंजीनियर (स्वान केन्द्र) हेम भट्ट ने बताया कि यात्रियों के परमिट के अधिक आवेदन आने पर यात्रियों को कोई दिक्कत न हो इसलिए देर शाम को भी परमिट जारी किये जा रहे हैं।

यात्रा के इस सीजन में मौसम साथ दे तो रिकार्ड संख्या में यात्रियों का आना तय है।

बदल रहा है हल्द्वानी का मुख्य चौराहा

हल्द्वानी। शहर का सबसे प्रमुख कालाढूंगी चौराहा बदल रहा है। यहाँ पर पीपल के पेड़ के नीचे कालू सिद्ध बाबा का जो मन्दिर है, उसे बदल की भूमि पर नव निर्मित भवन में शिफ्ट करने के साथ ही चौराहे की उधेड़-बुन तेज है। अपने दौरे में सीएम पुष्कर सिंह धामी ने प्राण प्रतिष्ठा के आयोजन में भागीदारी की। मेयर सहित तमाम लोग उपस्थित थे।

शहर में सड़क चौड़ीकरण सहित चौराहों के सौन्दर्यीकरण की प्रक्रिया में इस सर्वाधिक व्यस्त चौराहे की ओर सबका ध्यान है। आने वाले दिनों में यहाँ पूरी तरह बदलाव दिखाई देगा।

गुलजार है फूलों की घाटी, पर्यटन भी

चमोली। फूलों की घाटी इन दिनों गुलजार है और पर्यटन भी गति में है। नन्दादेवी राष्ट्रीय पार्क की रेंज अधिकारी ने बताया कि उद्यान में आने वाले पहले जत्थे में 83 पर्यटकों से इस बार शुरुआत हुई। पहले दल को परमिट जारी किया गया जिसमें चार पर्यटकों ने ऑनलाइन और 79 ने सामान्य तरीके से अनुमति ली थी। फूलों की घाटी के लिये गोविन्दघाट कस्बे से पुष्पावती नदी के किनारे भ्यूंडार के रास्ते घांघरिया से जाता जाता है। प्रत्येक वर्ष देश-विदेश से हजारों पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं।

वनस्पतियों की विविधता और महकते फूलों को देखते हुए यूनेस्को ने वर्ष 2005 में इसे विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया था। पर्यटकों के लिये यह घाटी जून में खोली जाती है जो अक्टूबर में हिमपात शुरू होने के बाद बन्द कर दी जाती है। इन दिनों मानसून आगमन के पास घाटी फूलों से महक रही है। फूलों की यह बहार सितम्बर तक चरम पर होगी। सैलानियों के साथ ही प्रकृति प्रेमियों से पर्यटन सीजन में तेजी है।

काशीपुर भाजपा में मची है घमासान

काशीपुर। महानगर काशीपुर में भाजपा नेताओं के गुटों की घमासान दिखाई दे रही है। चौराहे का नाम बदलने के लिए लिए गये निर्णय और मेयर की कार्यशैली को लेकर भाजपा में गुटबाजी खुलकर सामने है। विधायक ने मेयर की कार्यशैली पर सवाल उठाये हैं।

पूर्व विधायक हरभजन सिंह चीमा ने अपने कार्यालय में बकायदा पत्रकार वार्ता करते हुए कहा कि वह 20 साल से काशीपुर के विधायक रहे हैं। नगर निगम पहले भी चलता था लेकिन कभी भी निगम एवं विधायक के विचारों में फर्क नहीं था। दोनों मिलकर काशीपुर के विकास के लिए कार्य करते थे। वर्तमान में तो मेयर ने विधायक को विकास सम्बन्धी कार्यकलापों से इस तरह दूर कर दिया है जैसे दूध की मक्खी। चीमा ने कहा कि यदि विधायक या मेयर अपने कार्यक्षेत्र के बाहर और नियमानुसार काम नहीं कर रहे हैं तो सम्बन्धित अधिकारियों को उन्हें उचित राय देनी चाहिये।

कुल मिलाकर काशीपुर में भाजपा के गुट अपनी ताकत बटोर रहे हैं।

पार्षदों ने पूर्व विधायक चीमा के बयान का विरोध किया

काशीपुर के पूर्व विधायक हरभजन सिंह चीमा के बयान को गलत बताते हुए नगर निगम के पार्षद लामबन्द हैं। उन्होंने चीमा के बयान का विरोध करते हुए कहा कि विधायक बनने के 20 साल के कार्यकाल में कुछ कार्य नहीं किया और अब जबकि रुकी हुई विकास योजनाओं को मेयर दीपक बाली त्वरित करना चाहते हैं तो मामला उलझाने की कोशिश की जा रही है।

पार्षद सतीश शर्मा, पुष्कर बिष्ट, अनीता काम्बोज, अंजना गुंजन प्रजापति, वैशाली गुप्ता, मोहम्मद मोनीष आशी, संदीप सिंह मोनू, अनिल कुमार, पार्ष पति प्रकाश नेगी ने कहा कि सौ दिन में 63 करोड़ रुपये के कार्य चालू कर उन्होंने एक इतिहास रच दिया है। हर वार्ड में करोड़ों रुपये की लागत से सड़कें बन रही हैं। मेयर की कार्यप्रणाली पूरी तरह पारदर्शी है। चौराहों का नाम बदलने के लिये सामाजिक संस्थाओं ने मांग की थी उन्हीं के आधार पर चौराहों के नाम बदलने और सौन्दर्यीकरण के प्रस्ताव पर बोर्ड ने चर्चा कर सहमति जताई थी।

थराली पर टूटने की चर्चा और हलचल

कर्णप्रयाग। थराली में प्राणमती नदी पर निर्माणाधीन पुल के टूटने की चर्चा और हलचल जारी है। निर्माणाधीन पुल के टूटने के मामले में सरकार ने लोनिवि के दो अधिशासी अधिकारी और एक सहायक अधिशासी अभियन्ता को निलम्बित कर दिया था। लोनिवि सचिव पंकज कुमार पाण्डे ने निलम्बन के आदेश किये। तीनों अभियन्ताओं को मुख्य अभियन्ता पौड़ी कार्यालय से सम्बद्ध किया गया है।

डॉ.पाण्डे ने बताया कि तीनों इंजीनियरों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई प्रस्तावित है। आरोप इतने गम्भीर हैं कि उनकी पुष्टि होते ही कड़ा दण्ड दिया जा सकता है। इसलिये तीनों को तत्काल निलम्बित किया गया। बताते चलें कि थराली क्षेत्र में डुंगी-रतगांव मोटर मार्ग में प्राणमती नदी पर पुल बनाया जा रहा है। निर्माणाधीन 60 मीटर स्पान मोड्यूलर बैली पुल क्षतिग्रस्त हो गया। शुरुआती मामले में माना गया है कि पुल के निर्माण में अफसरों की लापरवाही है। अब जाँच के बाद पूरी जानकारी मिल सकेगी।

पौड़ी में जय कण्डोलिया महोत्सव

पौड़ी। जय कण्डोलिया महोत्सव सप्ताह भर तक धूमधाम से मनाया गया। रामलीला मैदान में रंगारंग कार्यक्रमों के अलावा खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सीएम ने मेले की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि राज्य सरकार की विभिन्न विकास योजनाओं को प्रदर्शनी के द्वारा जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है।

रामपुर तिराहा, सुनवाई नहीं हो पाई

देहरादून। रामपुर तिराहा काण्ड से जुड़े दोनों मामालों में कोर्ट में सुनवाई नहीं हो पाई। सीबीआई बनाम ब्रजकिशोर और सीबीआई बनाम एसपी मिश्रा की पत्रावलियों में सुनवाई के लिए तारीख आगे बढ़ गई। सीबीआई की ओर से हथियारों की फर्जी बरामदगी और आन्दोलनकारी का शव नहर में बहाए जाने के मामले की जांच कर छपार थाने में मुकदमा करया था, जिसके बाद विवेचना कर कोर्ट ने चार्चसीट दाखिल कर दी थी।

परिक्रमा

संस्कृति कर्मियों ने रैली निकाली

देहरादून। संस्कृति विभाग में पंजीकृत लोक कलाकारों ने कार्यक्रम आवंटन और बिल भुगतान की नीति को पूर्व की भांति संस्कृति निदेशालय से करने, संस्कृति सचिव को हटाने की मांग को लेकर रैली निकाली। कलाकार संस्कृति मंत्री सतपाल महाराज के सरकारी आवास के निकले जिन्हें पुलिस द्वारा रोक दिया गया। ऐसे में कलाकारों ने सड़क पर धरना दिया।

नेलांग व जादूंग में देवताओं का पूजन

उत्तरकाशी। सीमान्त के जादूंग व नेलांग ग्रामों में भोटिया व जाड़ समुदाय के सैकड़ों ग्रामीणों ने लाल देवता, चैन देवता और रिंगाली देवी की डोलियों के साथ पूजन किया। परम्परागत वेशभूषा में सम्मिलित लोगों के साथ ही सैन्य अधिकारियों ने पूजा-अर्चना में सहभागिता की। बताते चलें कि 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद यहाँ ग्रामीण विस्थापित कर दिये गये थे, जिनकी लोक परम्परा आज भी बनी हुई है। इस बीच होमस्टे सहित अन्य विस्तार भी होने लगा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

कुन्ती के समय......

प्रथम पृष्ठ का शेष

को एक संयत मुक्ति दे कर उन्होंने व्यक्ति परिवार और समाज को स्वस्थ रखने के लिए कुछ परम्पराओं को श्रेष्ठता का मापदण्ड प्रदान कर दिया था।

पाण्डु-कुन्ती सम्वाद के बाद अगला कदम क्या होना चाहिए था? यह कि जैसे सत्यवती का निर्देश पाकर उसकी पुत्रवधुओं अम्बिका और अम्बालिका ने वेदव्यास से धृतराष्ट्र और पाण्डु नाम से दो पुत्र प्राप्त कर लिए थे, वैसे ही पाण्डु की पत्नियां कुन्ती और माद्री प्रणीत वर्ग के अन्तर्गत इसी तरह से सन्तान प्राप्त कर सकती थीं। उन्होंने वैसा किया या नहीं किया, उसका इससे आगे और कोई विवरण नहीं मिलता। पर जो विवरण मिलता है वह काम और सन्तानप्राप्ति के मामलों में इतना तर्क सम्मत व्यवहार करने वाले समाज के स्वभाव में फिट करने से बड़ी कठिनाई आती है।

आगे का विवरण वही है जो हम सब जानते हैं। कुन्ती ने अपने पति पाण्डु महाराज को बताया कि बचपन में दुर्वासा को प्रसन्न कर देने के कारण उसे दुर्वासा से एक वर प्राप्त हुआ था कि वह जब भी चाहे किसी देवता का आह्वान कर उसे बुला सकती है और उससे मनचाहा पुत्र प्राप्त कर सकती है। इसके बाद वह पाण्डु से अनुमति मांगती है ताकि वह देवता का आह्वान कर पुत्र प्राप्त कर सके। अनुमति मिलने पर कुन्ती ने धर्मराज, वायु और इन्द्र का आह्वान कर इन देवताओं से क्रमशः युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन नामक पुत्र प्राप्त किए। उसने फिर माद्री को भी देवताओं को बुलाने का वह मन्त्र बताया और माद्री ने अश्विनी कुमार का आह्वान किया तो उसे नकुल और सहदेव की प्राप्ति हुई। यहाँ पर भी फुटनोट के तौर पर ही एक बात दर्ज की जा सकती है। क्यों नहीं कुन्ती ने ही अश्विनी कुमारों का आह्वान कर दिया? क्यों माद्री को वैसा करने को कहा? महाभारतकार का उत्तर बड़ा दिलचस्प है। कुन्ती को तीन पुत्र प्राप्त हो गए तो पाण्डु को लोभ हो गया और वे कुन्ती से ज्यादा पुत्र की कामना करने लगे। इस पर कुन्ती ने जबर्दस्त धारणा पेश करते हुए कहा कि किसी भी स्त्री को संकटकाल में भी तीन से ज्यादा सन्तानें प्राप्त नहीं करनी चाहिए- नातः चतुर्थ प्रसवं आपत्स्वपि वदन्त्युत। (आदिपर्व, 122.77)।

पर हमारे जिज्ञासु प्रश्न अब शुरू होते हैं। कुन्ती ने विवाह से पूर्व ही एक पुत्र कर्ण प्राप्त कर लिया था। उसने पति के असमर्थ होने के कारण 'प्रणीत' पुत्र प्राप्त करने का साहस दिखाया, वही साहस, जो सत्यवती ने अपनी पुत्रवधुओं के सन्दर्भ में दिखाया था। कुन्ती की प्रेरणा से ही माद्री ने भी दो प्रणीत पुत्र प्राप्त किए। फिर क्या कारण है कि महाभारतकार ने इस समस्त प्रकरण को दुर्वासा के वरदान, मन्त्रशक्ति के बल पर देवताओं के आह्वान और देवताओं के वरदान के साथ जोड़ दिया? पाण्डु ने जब कुन्ती को बन्धुदायात और अबन्धुदायाद नामक पुत्रों के बारे में विस्तार से बताया तो वे निश्चित ही जिस भाषा और शैली में कुन्ती से बात कर रहे थे, वह निहायत तर्कपूर्ण लग रही है और उस समय के समाज में बाकायदा मान्यताप्राप्त प्रथाओं का आभास पाण्डु के कथन में से मिल रहा है। जब वे अपनी पत्नी कुन्ती से सन्तान प्राप्ति का आह्वान करते हैं तो न तो उन्हें कोई संशय अपने कथन में है और न ही कोई सन्देह उन्हें अपनी पत्नी के चरित्र पर है। फिर ऐसी क्या जरूरत थी कि महाभारतकार ने पाँचों पाण्डुपुत्रों को देवताओं के आशीर्वाद का परिणाम बताने में इतनी मशक्कत की? अब तो हमारे जहन में पाँचों पाण्डुपुत्र और कुन्तीपुत्र कर्ण भी देवताओं का परिणाम ही अंकित हो चुके हैं।

और अगर इन पाँचों पाण्डुपुत्रों को समाज में सम्मान और मान्यता दिलवाने के लिए उन्हें देवताओं की सन्तान दिखाया गया है तो फिर कर्ण से अन्याय किया गया? वे भी तो सूर्य पुत्र बताए गए हैं और उन्हें भी वैसी ही मान्यता मिलनी चाहिए। दिलचस्प यह है कि भारतीय जनमानस में कर्ण को उतना ही बड़ा सिंहासन मिला है जितना शेष कुन्तीपुत्रों को मिला है। बल्कि कह सकते कि उनसे बड़ा सिंहासन कर्ण को मिला है। पर महाभारत में ऐस स्थान-स्थान पर तिरस्कृत होते दिखया गया है, इस हद तक कि कर्ण बाध्य होकर दुर्योधन जैसे कुटिल शासक के हमजोली बन गए। इस सबके पीछे का तर्क समझ में नहीं आता और अन्यथा तर्क और बुद्धि को सीधे स्पर्श करने वाला महाभारतकार इस मामले में आकर कहीं न कहीं अपने पाठकों को निराश करता है।

पर एक निष्कर्ष साफ है। महाभारत काल चूंकि हमारे इतिहास के भयानक तनावग्रस्त कालखण्डों में से एक रहा है, इसलिए उस समय स्थापित प्रथाओं और मर्यादाओं की स्वीकृति और अस्वीकृति के बीच जबर्दस्त अन्तर्द्वन्द्व चल रहा हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। जिस स्थापित मर्यादा को अपनाने का साहस दिखा कर सत्यवती ने अपने पति के कुल के लिए व्यासदेव से अपनी पुत्रवधुओं को पुत्र दिलावा दिए, उसी मर्यादा का पालन करने में एक पीढ़ी के अन्तराल में ही कुन्ती को थोड़ा संकोच हुआ और पूरे घटनाचक्र को दैवी आवरण देने का प्रयास इसी संकोच का परिणाम माना जा सकता है। इसी तरह विवाहपूर्व सन्तान पाने में सत्यवती को कोई संकोच अनुभव नहीं हुआ था, पर वैसा ही काम करने के बाद कुन्ती को संकोच हुआ, जिसका फल कर्ण को आजीवन भुगतना पड़ा। सत्यवती के बाद अम्बिका-अम्बालिका और फिर गांधारी-कुन्ती, हस्तिनापुर की कुलवधुओं के इस पीढ़ी परिवर्तन काल में मान्यताओं और संकोचों का यह द्वन्द्व चल रहा था, जिसकी वजह से कुन्ती जैसी महिला के चरित्र का साहस और प्रखरता घटनाओं के झरोखों में से झांक तो रहे हैं, पर पूरी तरह से उभर नहीं पाए हैं।

(साभार नवभारत टाइम्स)

---समय के साथ बदल गया----

हल्द्वानी कालू सिद्ध मन्दिर शिफ्ट

हल्द्वानी। सड़क चौड़ीकरण व चौराहों के फैलाव के कार्यों के बीच शहर के मुख्य कालाढूंगी चौराहे से कालू सिद्ध मन्दिर को पास में ही शिफ्ट कर दिया गया है। इससे चौराहा फैलने से सुविधा हुई है। लेकिन इस मन्दिर को लेकर जिस प्रकार की नींव थी वह नये रूप में है। कालू सैय्यत और कालू सिद्ध मन्दिर नाम से इसे जाना जाता रहा है। पीपल के पेड़ के नीचे गुड़ की भेली चढ़ाने का रिवाज रहा है लेकिन समय के साथ पेड़ को घेरकर निर्माण कार्य होता रहा और चौराहा घिरता चला गया। आगे चलकर इसमें देवी-देवताओं की अन्य मूर्तियां भी स्थापित कर दी गई। राह चलते चौराहे पर मन्दिर देख रुकने वालों से जाम की स्थिति बेकाबू होने लगी। अब मन्दिर शिफ्ट होने से जाम से राहत मिलेगी। नए भवन में श्री हरि विष्णु, शनिदेव, गोलज्यू, राम दरवार, शिव परिवार, दुर्गा समेत देवी देवताओं की 15 प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं।

भवाली में आग से भवन राख बना

भवाली/नैनीताल। भवाली के मुख्य बाजार में देवी मन्दिर के पास पुराने लकड़ी के भवरन में भीषण आग लगने से भवन और कई दुकानें जलकर राख हो गई। मौके पर एयरफोर्स की टीम और फायर विभाग ने सूझबूझ से आग फैलने से रोकी लेकिन हुए नुकसान की भरपाई नहीं हो सकती है। इस आग से भवाली में पुराने भवन को जो नुकसान हुआ वह भूला नहीं जा सकता। वर्षों पहले भी भवाली में इस प्रकार की आग से पन्त परिवार का पुस्तकालय राख हो गया था जिसमें ऐतिहासिक दस्तावेज व पुस्तकें थीं।

सीएम की निगरानी...

प्रथम पृष्ठ का शेष

के पीलीभीत, पूरनपुर, बरेली का सीधा सम्पर्क इस शहर से रहा है। पूर्णागिरी मेले का प्रमुख पड़ाव टनकपुर होने से भी इसकी पहचान चारों ओर gSY;khdlsdek का प्रवेश द्वार कहा जाता है लेकिन टनकपुर उससे भी पहले से विख्यात रहा है और पिथौरागढ़ से आने वाले यात्रियों की पहली पसन्द यही स्टेशन हुआ करता था। इतना सब होने के बावजूद टनकपुर का पिछड़ापन चौंकाने वाला है। हालात यह हो चुके हैं कि नेपाल सहित चारों ओर से तमाम लोगों की बसासत यहाँ पर हो गई लेकिन क्षेत्र के विकास के नाम पर राजनीति का जाप होता रहा। मुख्य शहर में जो पुराने लोग इसको संवारने में लगे रहे हैं, यहाँ के सामाजिक कार्यों, धार्मिक कार्यों में सहयोगी रहे हैं वह भी हालातों को देख किनारा सा करने लगे। इलाके में जमीन सम्बन्धी कार्यों से जुड़े लोग, खनन कारोबार से जुड़े लोगों की संख्या बढ़ती चली गई। ऐसे में नीति और नियोजन की बात कौन पूछता, चुनाव के समय पार्टी बनकर कुछ इधर कुछ उधर वाली स्थिति में रहे। अलबत्ता सौदे की बहार में डूबे टनकपुर जैसे पुराने शहर का क्या होगा यह चर्चा यहाँ के बुजुर्गों के बीच होती रही है। यही कारण है कि नगर पालिका चुनाव से लेकर लोकसभा चुनाव तक हर कोई बेहद सक्रिय हो जाता है।

बहुत समय बाद ऐसा मौका आया है। जब क्षेत्र का विधायक ही मुख्यमंत्री हो। इसका लाभ भी क्षेत्र को मिलना ही चाहिये। खटीमा विधानसभा से ज्यादा चम्पावत विधानसभा सीट पर चमके पुष्कर सिंह धामी भी क्षेत्र की नब्ज को समझ चुके हैं। उनकी दौड़भाग और सम्पर्कों से यह साफ है कि वह इसी क्षेत्र से अगला दांव चलेंगे। राजनीति चाहे जो भी हो, टनकपुर जैसे क्षेत्र का विकास एक बड़े क्षेत्र को लाभ देने वाला तो है ही।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जोहार क्लब का 70वां खेलोत्सव

फुटबाल के रोचक मुकाबलों के साथ ही अन्य प्रतियोगिताएं

मुनस्यारी। जोहार क्लब का 70 वां खेलोत्सव पूरे जोश में दिखाई दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ इसका शुभारम्भ किया गया। खेल मैदान में नगर पंचायत अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह पांगती ने इसका उद्घाटन किया। विशिष्टि अतिथि प्रधान आयकर आयुक्त नरेन्द्र सिंह जंगपांगी, सेवानिवृत्त कर्नल मंगल सिंह सयाना, रिजर्व बैंक मुम्बई के प्रबन्धक प्रयाग सिंह रावत, बालीबाल खिलाड़ी हीरा सिंह, मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू, गोकर्ण सिंह मर्तोलिया, सभासद जीतू ज्येष्टा, विक्रम पांगती, सुरेन्द्र रावत का क्लब के अध्यक्ष केदार सिंह मर्तोलिया और अन्य पदाधिकारियों द्वारा स्वागत-सत्कार किया गया। मंच संचालन लक्ष्मण सिंह पांगती कर रहे थे। उद्घाटन मैच अण्डर-14 ड्रैगन ब्वाइज ने जीता। इसके बाद मुख्य प्रतियोगिताओं का आगाज हुआ।

इस अवसर पर क्लब के महासचिव गौरव पांगती, दीपू बृजवाल, रवि बृजवाल, रमेश राम, गजराज पांगती, दीवान सिंह कोरंगा, कैलाश कोरंगा आदि थे।

लगातार हो रहे रोचक मुकाबलों में सीनियर बालक वर्ग में ड्रैगन ब्वाइज ने एकतरफा मुकाबले में मुनस्यारी जायंट्स को 6-10 से हराया। इस मैच का शुभारम्भ पूर्व मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. नारायण सिंह पांगती ने खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त कर किया। ग्रीष्मकालीन उत्सव के रूप में इन दिनों हिमनगरी में काफी चहल-पहल है।

पुरातन छात्र संगठन का आयोजन

दुर्गासिंह की जयन्ती पर वृक्षारोपरण व प्रतियोगिताएं

मुनस्यारी। पुरातन छात्र संगठन 1984-87 द्वारा जीआईसी में पिघलता हिमालय के संस्थापक स्व. दुर्गासिंह मर्तोलिया का स्मरण करते हुए वृक्षारोपण व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया। मर्तोलिया लॉज की ओर से आहूत कार्यक्रम पुरातन वरिष्ठ छात्र-छात्राओं ने विद्यालय परिवार के साथ वृक्षारोपण किया। डा. दिनेश मर्तोलिया जो कि इस आयोजन के लिये पहले से ही काफी सक्रिय थे, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा हो रही है। उन्होंने चाचा स्व. दुर्गा सिंह को याद करते हुए कहा कि वह कहा करते थे- 'जो भी काम करो दिल लगाकर करो। उनके जन्मदिवस पर यह प्रयास पुरातन छात्र संगठन कर रहा है।' मंजू पांगती ने अपने पिता स्व.मर्तोलिया का स्मरण करते उनके समाजोत्थान के कार्यों की चर्चा की।

विक्रम सिंह पांगती, धीरेन्द्र वृजवाल सहित सभी ने स्व. मर्तोलिया के जुझारु व्यक्तित्व के बारे में बताया कि किस तरह से बर्फ से बन्द होने वाली रोड खुलवाने के लिये उन्होंने बड़ा आन्दोलन किया। उनकी यादों का पिघलता हिमालय आज भी नियमित रूप से पहाड़ की सच्चाई को उजागर करता है। कार्यक्रम में दूर-दराज से मुनस्यारी पधारे लोगों ने इस प्रकार के आयोजन को स्मरणीय और आगे भी बरकरार रखने की बात कही।

इस अवसर पर राजकीय इण्टर कालेज में चित्रकला, निबन्ध (हिन्दी व अंग्रेजी), भाषण (हिन्दी एवं अंग्रजी) प्रतियागिताएं सीनियर व जूनियर वर्ग में आयोजित की गई। प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के दौरान गोकुल सिंह लस्पाल, राजू बृजवाल, वीरेन्द्र सिंह टोलिया, शीला बृजवाल, मुन्नी रावत, दमयन्ती पांगती सहित पुराने साथियों व इण्टर कालेज के विद्यार्थियों ने गीत-संगीत के साथ हिमनगरी के पुराने दिनों को याद किया।

पिघलता हिमालय स्थापना के 48वें वर्ष में प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

हरीश सिंह टोलिया

वृन्दावन विहार, मल्ली बमौरी हल्द्वानी

प्रेम सिंह मर्तोलिया

प्रेम कुंज, फ्रेंड कलोनी, दोनहरिया मल्ली बमोरी, हल्द्वानी

Heritage Convent School

Vill- Inderpur Chorgalia (Nainital)

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise

Bus Station

Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)